ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 12, Dec 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गाँधी के नेतृत्व की भूमिका

डॉ. वन्दना शर्मा
असि० प्रोफेसर – इतिहास
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
फतेहाबाद, आगरा।

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन आधुनिक भारत के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं सामाजिक प्रक्रियाओं में से एक था, जिसने देश को औपनिवेशिक दासता से मुक्त कराने के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक एकता तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस आंदोलन को व्यापक जनआधारित स्वरूप प्रदान करने में महात्मा गाँधी का नेतृत्व अत्यंत निर्णायक सिद्ध हुआ।

महात्मा गाँधी ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति तक सीमित न रखते हुए इसे नैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पुनर्निर्माण के आंदोलन के रूप में विकसित किया। उन्होंने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह तथा आत्मबल जैसे सिद्धांतों को संघर्ष का आधार बनाकर जनता को शांतिपूर्ण एवं संगठित प्रतिरोध का मार्ग दिखाया। गाँधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन पहली बार ग्रामीण भारत, किसानों, मजदूरों, महिलाओं, विद्यार्थियों तथा वंचित वर्गों तक पहुँचा, जिससे राष्ट्रीय आंदोलन एक वास्तविक जनआंदोलन में परिवर्तित हो गया।

गाँधीजी ने भारतीय राजनीति में नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों को स्थापित करते हुए संघर्ष और संवाद के संतुलित मॉडल को प्रस्तुत किया। उनके नेतृत्व ने राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया तथा स्वतंत्रता आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नैतिक समर्थन दिलाया। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय राष्ट्रीय

आंदोलन में महात्मा गाँधी के नेतृत्व की प्रकृति, उनके राजनीतिक दर्शन, प्रमुख आंदोलनों, नेतृत्व शैली तथा भारतीय समाज एवं राजनीति पर उनके दीर्घकालीन प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द :

महात्मा गाँधी, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज, नेतृत्व, स्वतंत्रता संग्राम, जनआंदोलन, राष्ट्रवाद, सामाजिक परिवर्तन

1. प्रस्तावना

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन विश्व इतिहास के उन महत्वपूर्ण स्वतंत्रता संघर्षों में से एक है, जिसने राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ सामाजिक जागरण एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को भी जन्म दिया। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से भारत पर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन स्थापित हो चुका था, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना तथा राजनीतिक स्वायत्तता पर गहरा प्रभाव पड़ा। औपनिवेशिक नीतियों ने भारतीय संसाधनों का शोषण किया तथा जनता को आर्थिक एवं सामाजिक संकटों का सामना करना पड़ा।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ तो हो चुका था, किंतु यह आंदोलन मुख्यतः शिक्षित मध्यम वर्ग एवं अभिजात वर्ग तक सीमित था। सामान्य जनता, विशेष रूप से ग्रामीण समाज, स्वतंत्रता संघर्ष से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा नहीं था। इस परिस्थिति में राष्ट्रीय आंदोलन को ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता थी जो जनता के बीच विश्वास स्थापित कर सके और संघर्ष को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान कर सके।

महात्मा गाँधी का भारतीय राजनीति में प्रवेश इस संदर्भ में ऐतिहासिक परिवर्तन का कारण बना। दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव के विरुद्ध सफल संघर्ष के अनुभव के साथ भारत लौटने के बाद उन्होंने भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं—गरीबी, अशिक्षा, सामाजिक असमानता एवं औपनिवेशिक शोषण—को समझा। गाँधीजी ने यह स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन नहीं बल्कि जनजागरण की प्रक्रिया है।

उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को ग्रामीण भारत से जोड़ते हुए किसानों, मजदूरों, महिलाओं तथा युवाओं को राष्ट्रीय संघर्ष में सहभागी बनाया। उनकी सरल जीवन शैली, नैतिक आचरण तथा जनसंपर्क क्षमता ने जनता में विश्वास उत्पन्न किया। परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पहली बार व्यापक जनभागीदारी वाला आंदोलन बना। इस प्रकार गाँधीजी का नेतृत्व भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक सिद्ध हुआ।

2. महात्मा गाँधी का राजनीतिक दर्शन

महात्मा गाँधी का राजनीतिक दर्शन नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं मानवीय मूल्यों पर आधारित था। उन्होंने राजनीति को सत्ता प्राप्ति का साधन न मानकर समाज सेवा एवं मानव कल्याण का माध्यम माना। उनके विचार भारतीय परंपरा, धार्मिक दर्शन तथा आधुनिक मानवीय चिंतन से प्रभावित थे।

गाँधीजी के अनुसार सत्य जीवन का सर्वोच्च सिद्धांत है और प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य सत्य की खोज करना है। उन्होंने अहिंसा को सत्य प्राप्ति का सबसे प्रभावी साधन बताया। उनका मानना था कि हिंसा अस्थायी विजय प्रदान कर सकती है, किंतु अहिंसा स्थायी सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करती है। इसी सिद्धांत के आधार पर उन्होंने राजनीतिक संघर्ष को नैतिक शक्ति से जोड़ दिया।

सत्याग्रह गाँधीजी की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा थी, जिसका अर्थ है सत्य के लिए आग्रह। यह अन्यायपूर्ण सत्ता के विरुद्ध शांतिपूर्ण प्रतिरोध की प्रक्रिया थी, जिसमें विरोधी के प्रति घृणा नहीं बल्कि नैतिक परिवर्तन का प्रयास किया जाता था। सत्याग्रह ने स्वतंत्रता आंदोलन को हिंसात्मक संघर्ष से अलग करते हुए नैतिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया।

गाँधीजी की स्वराज की अवधारणा भी अत्यंत व्यापक थी। उनके अनुसार स्वराज केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं बल्कि आत्मनिर्भर समाज, ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था, सामाजिक समानता एवं नैतिक अनुशासन पर आधारित व्यवस्था है। उन्होंने 'ग्राम स्वराज' की कल्पना प्रस्तुत की, जिसमें प्रत्येक गाँव आर्थिक एवं सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर हो।

इसके अतिरिक्त गाँधीजी ने ट्रस्टीशिप सिद्धांत के माध्यम से आर्थिक समानता पर बल दिया तथा सामाजिक न्याय को राष्ट्र निर्माण का आधार माना। इस प्रकार उनका राजनीतिक दर्शन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को नैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाने वाला सिद्ध हुआ।

3. असहयोग आंदोलन और जनभागीदारी का विस्तार

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में प्रारम्भ किया गया **असहयोग आंदोलन (1920–22)** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला व्यापक जनआंदोलन था, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन को अभिजात वर्ग की सीमाओं से निकालकर जन-जन तक पहुँचा दिया। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन के प्रति अहिंसात्मक असहयोग द्वारा प्रशासनिक व्यवस्था को कमजोर करना था। गाँधीजी का मानना था कि ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से ही संचालित हो रहा है, इसलिए यदि जनता सहयोग देना बंद कर दे तो शासन स्वतः कमजोर हो जाएगा।

असहयोग आंदोलन के अंतर्गत सरकारी विद्यालयों, न्यायालयों, विदेशी वस्त्रों तथा सरकारी उपाधियों का बहिष्कार किया गया। हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षण संस्थानों को छोड़कर राष्ट्रीय विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रवेश लिया। वकीलों ने न्यायालयों का बहिष्कार किया तथा आम जनता ने विदेशी कपड़ों की होली जलाकर स्वदेशी वस्त्रों को अपनाया। इस प्रकार आंदोलन ने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक तीनों स्तरों पर प्रभाव डाला।

गाँधीजी की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने किसानों, मजदूरों, व्यापारियों, महिलाओं तथा युवाओं को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा। पहली बार ग्रामीण भारत राष्ट्रीय राजनीति का सक्रिय भागीदार बना। महिलाओं ने भी आंदोलन में भाग लेकर सार्वजनिक जीवन में अपनी भूमिका को सशक्त किया। इससे भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना और राष्ट्रीय एकता की भावना का व्यापक विकास हुआ।

हालाँकि **चौरी-चौरा घटना (1922)** के बाद गाँधीजी ने आंदोलन वापस ले लिया, लेकिन इस निर्णय ने उनके सिद्धांतवादी नेतृत्व को स्पष्ट किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता की प्राप्ति नैतिक मूल्यों और अहिंसा के माध्यम से ही संभव है। असहयोग आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को जनआधारित स्वरूप प्रदान किया और आगे के आंदोलनों की नींव रखी।

4. सविनय अवज्ञा आंदोलन और नमक सत्याग्रह

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में प्रारम्भ किया गया **सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)** भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का एक महत्वपूर्ण चरण था। इस आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के अन्यायपूर्ण कानूनों का शांतिपूर्ण और संगठित उल्लंघन करना था। गाँधीजी ने नमक कर को ब्रिटिश शोषण का प्रतीक मानते हुए इसके विरोध में ऐतिहासिक **दांडी मार्च** का आयोजन किया।

12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से दांडी तक लगभग 240 मील की पदयात्रा ने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया। गाँधीजी द्वारा समुद्र तट पर नमक बनाकर कानून तोड़ने की घटना ने स्वतंत्रता आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध कर दिया। यह आंदोलन केवल नमक कानून तक सीमित नहीं रहा, बल्कि कर न देना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा सरकारी संस्थाओं के विरुद्ध शांतिपूर्ण प्रतिरोध इसका हिस्सा बन गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन ने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एक मंच पर लाने का कार्य किया। किसानों ने लगान न देने का निर्णय लिया, महिलाओं ने नमक सत्याग्रह और धरनों में सक्रिय भागीदारी की तथा युवाओं में राष्ट्रवाद की भावना और अधिक प्रबल हुई। इस आंदोलन ने ब्रिटिश शासन की वैधता को चुनौती दी और भारतीयों में आत्मविश्वास एवं राजनीतिक जागरूकता को मजबूत किया।

गाँधीजी का नेतृत्व इस आंदोलन में अत्यंत रणनीतिक और नैतिक था। उन्होंने संघर्ष को हिंसात्मक रूप लेने से रोकते हुए अनुशासन और अहिंसा पर विशेष बल दिया। परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार को गाँधी-इरविन समझौते (1931) के माध्यम से वार्ता के लिए बाध्य होना पड़ा। यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को निर्णायक दिशा देने वाला सिद्ध हुआ और विश्व स्तर पर अहिंसात्मक संघर्ष की एक मिसाल बना।

5. भारत छोड़ो आंदोलन और स्वतंत्रता संघर्ष का अंतिम चरण

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में वर्ष 1942 में प्रारम्भ किया गया **भारत छोड़ो आंदोलन** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सबसे निर्णायक और व्यापक जनआंदोलन माना जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय नेताओं से बिना परामर्श लिए भारत को युद्ध में शामिल करने के निर्णय

ने भारतीय जनता में असंतोष को बढ़ा दिया था। इसी पृष्ठभूमि में गाँधीजी ने अंग्रेजों के विरुद्ध अंतिम संघर्ष का आह्वान किया।

8 अगस्त 1942 को मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अधिवेशन में गाँधीजी ने ऐतिहासिक नारा **"करो या मरो"** दिया। इस आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश शासन को तत्काल भारत छोड़ने के लिए बाध्य करना था। गाँधीजी का यह आह्वान पूरे देश में स्वतंत्रता की तीव्र भावना का प्रतीक बन गया।

भारत छोड़ो आंदोलन की विशेषता यह थी कि यह पूर्णतः जनआधारित और स्वतःस्फूर्त आंदोलन बन गया। आंदोलन प्रारम्भ होते ही ब्रिटिश सरकार ने गाँधीजी सहित प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया, लेकिन इसके बावजूद जनता ने आंदोलन को जारी रखा। छात्रों, किसानों, मजदूरों, महिलाओं तथा युवाओं ने रेलवे, डाक-तार व्यवस्था और प्रशासनिक संस्थानों के विरुद्ध शांतिपूर्ण प्रतिरोध किया।

इस आंदोलन ने भारतीय जनता में आत्मनिर्भरता, साहस और राष्ट्रीय एकता की भावना को अत्यंत मजबूत किया। ग्रामीण क्षेत्रों में समानांतर सरकारों की स्थापना भी देखने को मिली, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय जनता अब स्वतंत्र शासन के लिए तैयार हो चुकी थी। यद्यपि आंदोलन को कठोर दमन का सामना करना पड़ा, फिर भी इसने ब्रिटिश शासन की नींव को हिला दिया और स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रक्रिया को तेज कर दिया।

भारत छोड़ो आंदोलन ने यह सिद्ध किया कि गाँधीजी का नेतृत्व केवल राजनीतिक नहीं बल्कि नैतिक एवं प्रेरणादायी था। उनके नेतृत्व ने जनता को भयमुक्त होकर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी, जिसके परिणामस्वरूप 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 12, Dec 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

6. महात्मा गाँधी का नैतिक नेतृत्व और राष्ट्रीय एकता का निर्माण

महात्मा गाँधी का नेतृत्व केवल राजनीतिक रणनीतियों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह नैतिक मूल्यों, सामाजिक सुधारों और मानवीय सिद्धांतों पर आधारित था। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को नैतिक शक्ति प्रदान करते हुए सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहिष्णुता और समानता को संघर्ष का आधार बनाया। गाँधीजी का मानना था कि वास्तविक स्वतंत्रता केवल राजनीतिक आजादी नहीं बल्कि सामाजिक और नैतिक उत्थान से संभव है।

गाँधीजी ने भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, धार्मिक विभाजन तथा सामाजिक असमानताओं को समाप्त करने का प्रयास किया। उन्होंने हरिजन आंदोलन चलाकर दलित वर्ग के उत्थान पर विशेष बल दिया तथा समाज में समान अधिकारों की भावना को प्रोत्साहित किया। मंदिर प्रवेश आंदोलन और सामाजिक सुधार अभियानों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक समरसता स्थापित करने का प्रयास किया।

राष्ट्रीय एकता के निर्माण में गाँधीजी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता को स्वतंत्रता संघर्ष की सफलता के लिए आवश्यक माना। विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों वाले भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने में उनके नेतृत्व ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके प्रयासों से स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक संघर्ष न रहकर राष्ट्रीय पुनर्जागरण का आंदोलन बन गया।

गाँधीजी ने स्वदेशी, ग्राम स्वराज और आत्मनिर्भरता की अवधारणा को बढ़ावा देकर भारतीय समाज को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास किया। चरखा और खादी को उन्होंने

आत्मनिर्भर भारत के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिला और भारतीयों में आत्मसम्मान की भावना विकसित हुई।

इस प्रकार महात्मा गाँधी का नेतृत्व भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में नैतिकता, जनभागीदारी और राष्ट्रीय एकता का आधार स्तंभ सिद्ध हुआ। उनका नेतृत्व आज भी लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और शांतिपूर्ण संघर्ष के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

7. महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों की भूमिका

महात्मा गाँधी का नेतृत्व केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज के व्यापक सामाजिक, आर्थिक और नैतिक पुनर्निर्माण पर भी विशेष बल दिया। उनका मानना था कि वास्तविक स्वतंत्रता तभी संभव है जब समाज आंतरिक रूप से सशक्त, आत्मनिर्भर और सामाजिक बुराइयों से मुक्त हो। इसी उद्देश्य से उन्होंने अनेक रचनात्मक कार्यक्रमों को राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न अंग बनाया।

गाँधीजी ने स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा देते हुए विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और देशी उद्योगों के विकास पर बल दिया। चरखा और खादी को उन्होंने आत्मनिर्भरता तथा आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतीक बनाया। उनके अनुसार खादी केवल वस्त्र नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का माध्यम थी। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े तथा कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन मिला।

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में गाँधीजी ने अस्पृश्यता उन्मूलन को अत्यंत महत्वपूर्ण माना। उन्होंने दलित वर्ग को "हरिजन" नाम देकर समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयास किया। मंदिर प्रवेश आंदोलन, स्वच्छता अभियान तथा सामुदायिक सहयोग के माध्यम से उन्होंने सामाजिक समानता और

मानव गरिमा की भावना को मजबूत किया। गाँधीजी का विश्वास था कि सामाजिक भेदभाव राष्ट्र की एकता को कमजोर करता है।

महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने में भी गाँधीजी की भूमिका महत्वपूर्ण रही। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रेरित किया। नमक सत्याग्रह और अन्य आंदोलनों में महिलाओं की व्यापक भागीदारी ने भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किया। इससे महिलाओं में आत्मविश्वास तथा राजनीतिक चेतना का विकास हुआ।

गाँधीजी ने ग्राम स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए गांवों को राष्ट्र की मूल इकाई माना। उनका उद्देश्य विकेन्द्रीकृत शासन व्यवस्था स्थापित करना था, जिसमें प्रत्येक गांव आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से आत्मनिर्भर हो। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) की संकल्पना दी, जिसमें श्रम, नैतिकता और व्यावहारिक ज्ञान को महत्व दिया गया।

इस प्रकार गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को केवल राजनीतिक संघर्ष न बनाकर सामाजिक पुनर्जागरण का आंदोलन बना दिया। उनके नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम ने समाज सुधार, आर्थिक आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता को समान रूप से प्रोत्साहित किया, जो स्वतंत्र भारत के निर्माण की आधारशिला सिद्ध हुए।

8. महात्मा गाँधी के नेतृत्व की सीमाएँ एवं आलोचनाएँ

यद्यपि महात्मा गाँधी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के सर्वाधिक प्रभावशाली नेता थे, फिर भी उनके नेतृत्व को विभिन्न स्तरों पर आलोचनाओं का सामना करना पड़ा। अनेक राष्ट्रवादी नेताओं तथा क्रांतिकारियों

का मानना था कि गाँधीजी की अहिंसात्मक नीति स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रक्रिया को धीमा कर रही थी। कुछ नेताओं जैसे सुभाष चन्द्र बोस और भगत सिंह के समर्थकों का विचार था कि ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अधिक कठोर एवं प्रत्यक्ष संघर्ष आवश्यक था।

असहयोग आंदोलन तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन को अचानक वापस लेने के निर्णय की भी व्यापक आलोचना हुई। विशेष रूप से चौरी-चौरा की घटना के बाद आंदोलन स्थगित करने से अनेक युवाओं में निराशा उत्पन्न हुई। आलोचकों का मत था कि इससे स्वतंत्रता आंदोलन की गति प्रभावित हुई।

इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने गाँधीजी की आर्थिक नीतियों, विशेषकर ग्राम स्वराज और कुटीर उद्योगों पर अत्यधिक बल देने को औद्योगिक विकास के दृष्टिकोण से सीमित माना। आधुनिक औद्योगीकरण के समर्थकों का मानना था कि भारत के विकास के लिए बड़े उद्योगों और वैज्ञानिक प्रगति की आवश्यकता थी।

साम्प्रदायिक राजनीति के संदर्भ में भी गाँधीजी को चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के उनके निरंतर प्रयासों के बावजूद देश विभाजन को रोकना संभव नहीं हो सका। तथापि यह भी सत्य है कि गाँधीजी ने अंतिम समय तक राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सद्भाव बनाए रखने का प्रयास किया।

इन आलोचनाओं के बावजूद इतिहासकारों का व्यापक मत है कि गाँधीजी का नेतृत्व नैतिकता, जनसंगठन और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित था, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को जनआंदोलन का स्वरूप प्रदान किया।

9. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर महात्मा गाँधी के नेतृत्व का समग्र प्रभाव

महात्मा गाँधी के नेतृत्व ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा और स्वरूप दोनों को मूल रूप से परिवर्तित किया। उनके आगमन से पूर्व स्वतंत्रता आंदोलन मुख्यतः शिक्षित एवं अभिजात वर्ग तक सीमित था, किंतु गाँधीजी ने इसे जनसामान्य का आंदोलन बना दिया। किसानों, मजदूरों, महिलाओं, विद्यार्थियों तथा ग्रामीण समाज की व्यापक भागीदारी ने आंदोलन को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

गाँधीजी ने राजनीतिक संघर्ष को नैतिक संघर्ष में परिवर्तित किया। सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया कि बिना हिंसा के भी साम्राज्यवादी शक्ति को चुनौती दी जा सकती है। उनके नेतृत्व ने भारतीय राजनीति में लोकतांत्रिक चेतना, नागरिक अधिकारों और जनसहभागिता की परंपरा को मजबूत किया।

गाँधीजी के नेतृत्व का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि विश्व स्तर पर भी देखा गया। उनके अहिंसा सिद्धांत से प्रेरित होकर मार्टिन लूथर किंग जूनियर तथा नेल्सन मंडेला जैसे नेताओं ने अपने देशों में स्वतंत्रता और समानता के लिए संघर्ष किया।

स्वतंत्र भारत की राजनीतिक व्यवस्था, लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय तथा शांतिपूर्ण विरोध की परंपरा पर गाँधीजी की विचारधारा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। भारतीय संविधान में निहित समानता, स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धांत भी उनके आदर्शों से प्रेरित माने जाते हैं।

इस प्रकार महात्मा गाँधी का नेतृत्व भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का केंद्रीय स्तंभ सिद्ध हुआ, जिसने न केवल भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई बल्कि आधुनिक भारत की वैचारिक एवं नैतिक नींव भी स्थापित की।

संदर्भ सूची

1. गाँधी, मोहनदास करमचंद। (2001). *सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा*. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।

2. चन्द्र, बिपिन। (2016). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।

3. चन्द्र, बिपिन। (2014). *आधुनिक भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

4. शर्मा, आर. एस. (2011). *आधुनिक भारत*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

5. ग्रोवर, बी. एल., एवं ग्रोवर, एस. (2018). *आधुनिक भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: एस. चंद प्रकाशन।

6. मजूमदार, आर. सी. (2010). *भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास*. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

7. नन्दा, बी. आर. (2005). *महात्मा गाँधी: एक जीवनी*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

8. ताराचंद। (2012). *भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास*. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।

9. देसाई, ए. आर. (2008). *भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि*. नई दिल्ली: मैकमिलन इंडिया।

10. पाण्डेय, बी. एन. (2013). *भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

11. सिंह, के. के. (2015). *महात्मा गाँधी और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन*. नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी।

12. कुमार, रविन्द्र। (2017). *गाँधी विचार और भारतीय राजनीति*. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।

13. मिश्रा, एस. सी. (2014). *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

14. अवस्थी, ए. पी. (2016). *भारतीय राजनीति एवं राष्ट्रीय आंदोलन*. जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।

15. जोशी, पी. सी. (2010). *राष्ट्रीय आंदोलन और महात्मा गाँधी*. नई दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस।